भयानक रस –

(भय) जैसे – उधर गरजती सिंधु लहरियाँ, कुटिल काल के जालों सी।
चली आ रही फेन उगलती, फन फैलाये व्यालों सी।

एक ओर अजगरहिं लखि, एक ओर मृगराय।
विकल बटोही बीच ही, परयो मूर्छा खाय।

रौद्र रस –

(क्रोध) जैसे – उस काल मारे क्रोध के, तन काँपने उसका लगा।
मानों हवा के जोर से, सोता हुआ, सागर जगा।

वीभत्स रस –

(जुगुप्सा/घृणा) सिर बैठो काग, दोउ आंख खात निकारत।
जीभहिं खींचत स्यार, अतिहि आनंद उर धारत।
गिद्ध जांघ को खोदि खोदि के, मांस उपारत।

अद्भुत रस –

(आश्चर्य) जैसे – देखि अखोदा शिशु के मुख में, सकल विश्व की छाया।
लगा भूलने वह बनी अचेतन, हिल न सकी कोमल काया।

शान्त रस –

(निर्वेद) कवियों के उपदेशात्मक वाक्य शान्त रस के अंतर्गत आते हैं।

जैसे – मन रे, तन कागद का पुतला।
बूंद लगे विनस जाय छिन में,
गरब करै का इतना।

वात्सल्य रस –

(सूरदास) (अनुराग/प्रेम) किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत।
मनिमय कनक नन्द के आंगन,
बिम्ब पकरिबैं धावत।

CHUDHARY INSTITUTE, HANUMANGARH 9001333264

Scanned by CamScanner

छन्द का प्राचीनतम् उपयोग - ऋग्वेद
छन्दों का प्रयोग सबसे पहले किया - पिंगल
छन्द वेद पुरुष का पैर है।

छन्द

पदों को या वाक्यों को उचित आरोह अवरोह के अनुसार में रखे जाने से जो बनता है, उसे छन्द कहते हैं।

इसलिए छन्द का शाब्दिक अर्थ आच्छादित करना होता है।

छन्द का प्रयोग पद्य में किया जाता है। चूंकि हमारे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद पद्य में है इसलिए छन्द का भी प्राचीनतम् उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।

छन्द को 'वेदपुरुष का पैर' कहा जाता है।

छन्द का सर्वप्रथम प्रयोग करने वाले आचार्य पिंगल (छन्द-शास्त्र में) थे। (पिंगल शास्त्र)

छन्द के अंग

① पाद / चरण - सामान्य रूप से छंद में 4 चरण होते हैं -

(a) दो विषम चरण।
(b) दो सम चरण।

1 _____, 2 _____ ।
3 _____, 4 _____ ॥
(विषम) (विराम) (सम)

लेकिन कुछ ऐसे भी छन्द हैं जिनमें ६ - ६ चरण होते हैं जैसे - कुण्डलिया, छप्पय इत्यादि।

② यति / विराम - श्वास लेने के लिए क्षण भर हम जहाँ रुकते हैं उसे यति / विराम कहते हैं।

Scanned by CamScanner

3) तुक (Rhyme) - चरण के अंतिम अक्षरों में मैत्री भाव या समानता हो तो उसे तुक कहते हैं।
जिस पद्य के अंत में तुक होता है उस पद्य को 'तुकान्त' कहते हैं।

तुक को 'छन्द की आत्मा' कहा जाता है।

4) अतुक

5) लघु - (।) अ, इ, उ, ऋ
एक मात्रिक स्वरों पर लघु लगता है।

6) गुरु (S) - दीर्घ स्वर / द्विमात्रिक स्वर / प्लुत स्वर (द्विमात्रिक)
(बड़ा)
(i) आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ
(ii) S ओ३म् , S कृष्ण३ (अवग्रह के पूर्व वाले अक्षर को गुरु माना जाता है)
(iii) S ए S ओ
(iv) किसी ह्रस्व / छोटे स्वर के बाद आधा अक्षर आये तो -
उज्ज्वल ।।

गण
(समूह)

लघु गुरु के तीन अक्षरों का नियत समूह गण कहलाता है।

गणों की कुल संख्या 8 होती है।

CHANDRAKANT UPADHYAY 8400333264

Scanned by CamScanner

यमाताराजभानसलगा

यमाता —
मातारा —
ताराज —
राजभा —
जभान —
भानस —
सलगा —
नसल —

छन्द के भेद

छन्द के तीन भेद होते हैं —

1. वार्णिक छन्द
2. मात्रिक छन्द
3. मुक्तक छन्द

वार्णिक छन्द – जिस छन्द का निर्धारण वर्णों के आधार पर होता है उसे वार्णिक छन्द कहते हैं।

मात्रिक छन्द – जिस छन्द का निर्धारण मात्रा के आधार पर हो, उसे मात्रिक छन्द कहते हैं।

मुक्तक छन्द – जिस छन्द में छन्दों के नियमों का प्रत्यक्ष उल्लेख हो, अर्थात् छन्दों के लक्षण पूरे न मिलते हों, उसे मुक्तक छन्द कहते।

कुछ प्रमुख वार्णिक छन्द

1. **सवैया –** जिस छन्द के प्रत्येक चरण में २२-२६ तक के वर्ण रहें, वह सवैया छन्द कहलाता है।

उदा० – कुछ और नहीं है, युगलोचनों में प्रतिबिम्बित है अनुराग अमंद।

— २६ वर्ण हैं।

Scanned by CamScanner

* मात्रा और वर्णों अक्षर नहीं गिनना है।

घनाक्षरी- प्रत्येक चरण में 31 वर्ण होते हैं।

मात्रिक छन्द

3 प्रकार के होते हैं—

1. **सममात्रिक छन्द** - चारों चरणों में समान मात्राएँ हों।
2. **अर्द्ध सममात्रिक छन्द** - दो चरणों में सम और दो चरणों में विषम मात्राएँ हों।
3. **विषम मात्रिक छन्द** - चारों चरणों में विषम मात्राएँ हों।

1. सममात्रिक छन्द-

(i) चौपाई- जिस छन्द के प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएँ हों, उसे सम मात्रिक चौपाई छन्द कहते हैं।

उदा०- बंदऊँ गुरुपद पदुम परागा, सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।
ISI IIII III ISS III ISI III IISS

प्रथम चरण - 16 मात्राएँ
द्वितीय चरण - 16 मात्राएँ

(ii) रोला- जिस छन्द के प्रत्येक चरण में 24-24 मात्राएँ होती हैं वहाँ पर रोला छन्द होता है।

उदाहरण- जो जगहित पर प्राण निछावर है कर पाता = 24 मात्राएँ
IIII II SI ISII S II SS
जिसका तन है किसी लोकहित में लग जाता = 24 मात्राएँ
I IS II S I S SI I I S II S S

गीतिका- प्रत्येक चरण - 26-26 मात्राएँ।

हरिगीतिका- प्रत्येक चरण में - 28-28 मात्राएँ।

आल्हा छन्द- प्रत्येक चरण में - 31-31 मात्राएँ।

CHAUDHARY INSTITUTE ALLAHABAD 9005332264

Scanned by CamScanner

अर्द्ध सममात्रिक छन्द

1) **दोहा –** जिस छन्द के पहले और तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ और दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ हो, उसे दोहा छंद कहते हैं।

उदा० –
रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून । — प्रथम व तृतीय = 13 मा
पानी गए न ऊबरै, मोती मानुस चून ॥ — द्वितीय व चतुर्थ = 11-11 मा

2. **सोरठा –** जिस छन्द के विषम चरण में 11-11 मात्राएँ एवं सम चरण में 13-13 मात्राएँ हों, उसे सोरठा छन्द कहते हैं।

* सोरठा छन्द, दोहा का उल्टा होता है।

उदा० –
मूक होइ वाचाल पंगु चढ़इ गिरिवर गहन ।

3. **बरवै –** विषम चरण में 12-12 मात्राएँ और सम चरण में 7-7 मात्रा हों, बरवै छन्द कहलाता है।

उदा० –
जग जोग शिव शोभित; शिवा उदार ।
सरद सुवारिद में, जनु, तड़ित बिहार ॥

विषम मात्रिक छन्द

विषम मात्रिक छन्द निम्नवत् हैं –

1. कुण्डलिया
2. छप्पय

} कुछ देर रोउ

Scanned by CamScanner

कु → कुण्डलिया → देर

दोला रोला

घु - हप्पय → रोमु

रोला उल्लाला

CHANDRA CLASSES ALLAHABAD 8400332626

शब्द

" वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं। "

* भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण है लेकिन अर्थ की दृष्टि से भाषा की सबसे छोटी इकाई शब्द है।

शब्द-भेद

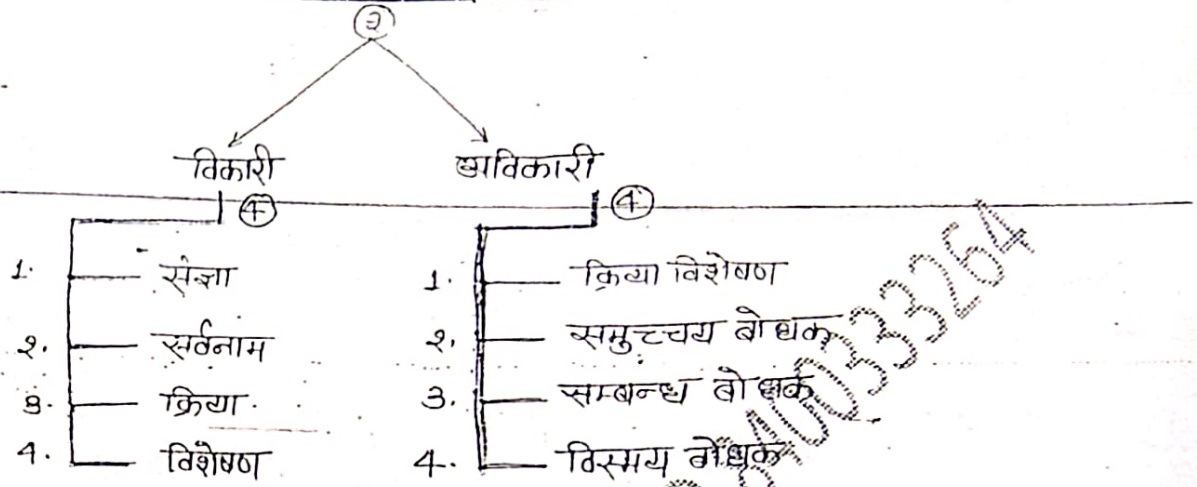
1. उत्पत्ति / स्रोत के आधार पर

④

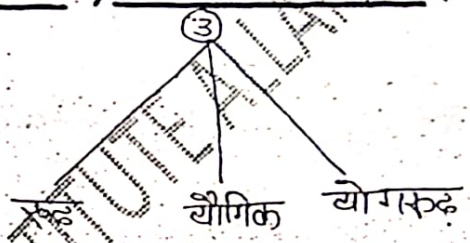
तद्भव तत्सम देशज विदेशी

Scanned by CamScanner

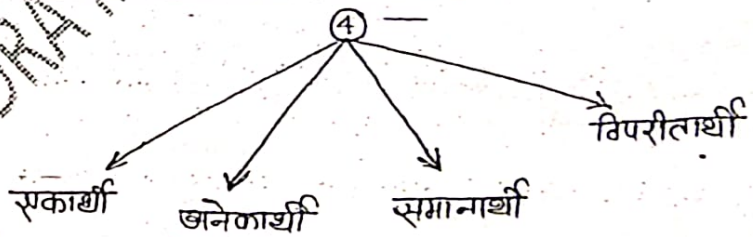
2. रूप के आधार पर



3. रचना / बनावट के आधार पर



4. अर्थ के आधार पर शब्द भेद



1. उत्पत्ति / स्रोत के आधार पर–

(i) तत्सम शब्द – संस्कृत भाषा के वे शब्द जिनका प्रयोग हिंदी भाषा में किया जाता है, उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं।
संस्कृत के शब्दों को बोलचाल की भाषा में नहीं लाते।
जैसे – दुग्ध, भ्रमर, कर्पट, अग्नि, मुख, घृत, कुक्कुर, हस्त, कच्चपूरिका, जृम्भिका, धूम, आम्र, फलफल, गोधूम, दन्त इत्यादि।

CHUDAIL LIBRARY 9535326254

Scanned by CamScanner

· संस्कृत के कुछ ऐसे भी शब्द हैं जिनका प्रयोग हम बोलचाल की भाषा के रूप में करते हैं, इन शब्दों की पहचान हेतु –

① उस शब्द में संधि का प्रावधान होगा ।

② उस शब्द में संस्कृत के उपसर्ग होंगे ।

~~जैसे – विद्यालय, अजीवन, उज्ज्वल, गणेश, सज्जन, गरीबी इत्यादि ।~~

२. तद्भव शब्द – जब संस्कृत के शब्दों को व्यावहारिक रूप देते हैं, अर्थात् बोलचाल की भाषा में प्रयोग करते हैं तो वह शब्द तद्भव शब्द कहलाता है।

तद्भव शब्द संस्कृत के शब्दों से ही बिगाड़कर बनाये जाते हैं।

जैसे – कचौड़ी, घी, कपड़ा, दूध, दांत, गेहूं, जन्माष्टमी, होश, कपूर, सुंआ आदि ।

३. देशज शब्द – ऐसे शब्द जिनकी उत्पत्ति का पता न चले, अर्थात् हमारे देश में ही स्थानीय भाषा वाले शब्द जिनका प्रयोग हम हिंदी में करते हैं, उन्हें देशज शब्द कहते हैं।

जैसे – लोटा, लाठी, बिंदी, टीका ।

४. विदेशज / आगत / गृहीत शब्द – विदेशी भाषा के वे शब्द जिनका प्रयोग हम हिन्दी भाषा में करते हैं, उन्हें विदेशज शब्द कहते हैं।

i) अरबी / फारसी के शब्द – दुकान, मकान, दुश्मन, किताब, अखबार, कारखाना, पायदान, बाजार इत्यादि ।

ii) चीनी शब्द – चाय, चाउमीन, मंचूरियन

iii) तुर्की शब्द – कैंची, चाकू, दरोगा इत्यादि ।

iv) पुर्तगाली शब्द – आलमारी, बाल्टी, काजू, बटन, गमला, लालटेन आदि

CHAND INSTITUTE, ALLAHABAD 9839532647

Scanned by CamScanner

जापानी शब्द – रिक्शा, फानूस ।

फ्रेंच शब्द – बोतल, कारतूस ।

संकर शब्द – दो अलग - अलग भाषाओं के शब्दों के योग से बनाये गये शब्द को संकर शब्द कहा जाता है ।

जैसे – ई - रिक्शा, पानदान, हवादार, रेलगाड़ी, टिकटघर, फूलदान, शताब्दी एक्सप्रेस इत्यादि ।

रचना के आधार पर शब्दों के भेद –

रूढ़ शब्द – वे शब्द जिनका सार्थक खण्ड संभव न हो अर्थात् वे शब्द जिनके दो अलग - अलग सार्थक शब्द न किए जा सके उन्हें रूढ़ शब्द कहते है ।

पहचानने का तरीका – जिस शब्द में उपसर्ग / प्रत्यय / संधि या समास का प्रावधान न हो, वह शब्द रूढ़ शब्द होता है ।

जैसे – कमल, आम, फल, समय, घर इत्यादि ।

१. यौगिक शब्द – वे शब्द जिनका सार्थक खण्डन संभव है; अर्थात् जिन शब्दों को दो सार्थक शब्दों में तोड़ा जा सके लेकिन ध्यान रहे टूटने / जुड़ने पर अर्थ परिवर्तन न हो, उसे यौगिक शब्द कहते हैं ।

जैसे – विद्यालय, प्रत्येक, घुड़सवार आदि ।

पहचान का तरीका – जिस शब्द में प्रत्यय / उपसर्ग, संधि या समास का प्रावधान रहे, उन्हें यौगिक शब्द समझना चाहिए ।

३. योगरूढ़ – वे शब्द जो अलग होने के पश्चात् अपना अर्थ बदल कर दे, उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं ।

पहचान का तरीका – बहुव्रीहि समास के उदाहरण योग रूढ़ शब्द के अन्तर्गत आते हैं ।

Scanned by CamScanner

रूप के आधार पर शब्द के भेद-

1. **विकारी शब्द** - वे शब्द जिनका रूप लिंग, वचन के अनुसार बदल जाय, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं।
विकारी शब्द चार प्रकार के होते हैं-

a. संज्ञा - बालक - बालिका
b. सर्वनाम - मेरा - मेरी
c. विशेषण - काला काली
d. क्रिया - करता, करती

HINDI INSTITUTE ALLAHABAD 8400333764

संज्ञा
{Noun}

मुख्य रूप से 3 प्रकार की होती है -

a. व्यक्तिवाचक संज्ञा (Proper Noun)
b. जातिवाचक संज्ञा (Common Noun)
c. भाववाचक संज्ञा (Abstract Noun)

* संज्ञा के सामान्य रूप से 5 भेद हैं।
* अर्थ के आधार पर संज्ञा के 5 भेद होते हैं।
* संज्ञा के मुख्य रूप से 3 भेद होते हैं।

व्यक्तिवाचक संज्ञा - जब किसी single वस्तु, व्यक्ति का नाम हो, तो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे - गंगा, हिमालय, भारत, रश्मिया, इलाहाबाद इत्यादि।

जातिवाचक संज्ञा - जिस नाम से एक ही प्रकार के एक से अधिक व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम का बोध हो, कराए। लेकिन ध्यान रहे यह किसी समूह या संख्या का बोध नहीं कराता है।
जैसे - पर्वत, छात्र, नदी, मकान आदि।

समूह वाचक संज्ञा - एक ही प्रकार के व्यक्ति, वस्तु, स्थान को जिस से जाना जाय और वह समूह एवं संख्या का बोध कराए तो उसे समूह वाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे - रैली, सभा, गुच्छा, सेना, बाजार इत्यादि।

Scanned by CamScanner

द्रव्यवाचक संज्ञा – नाप-तौल की वे वस्तुएं जिनको किसी नाम से जाना जाता है, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहा जाता है।
जैसे – पानी, कपड़ा, घी, तेल, सोना, चाँदी इत्यादि।

भाववाचक संज्ञा – जिन नामों / चीजों / वस्तुओं को हम देख न सकें, केवल महसूस कर सकें उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं अर्थात् व्यक्ति, वस्तु की दशा / स्थितियों को।
जैसे – चेतन, हरियाली, दया, बुढ़ापा, बचपन इत्यादि।

घात – आत्मघात	पन – बचपन	की – तड़की, चटकी, मटकी
वाद – आतंकवाद	त्व – आपनत्व	ई – हाँकी, झाँकी
इकी – प्रौद्योगिकी	अन्त – मनगढ़न्त	कार – चमत्कार, अंधकार
आहट – मुस्कुराहट	आवा – पहनावा	ता – महानता
आई – पढ़ाई, लिखाई	उआ – चटका, पटाका	मा – महिमा, गरिमा
आस – मिठास	पा – मोटापा, बुढ़ापा	गी – सादगी, बंदगी

सर्वनाम
[Pronoun]

संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किये जाने वाले वे शब्द जो संज्ञा के नामों के स्थान पर प्रयोग किये जा सकते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं।
सर्वनाम के 6 भेद होते हैं –

1) पुरुषवाचक सर्वनाम – जब व्यक्ति के नाम के स्थान पर किसी शब्द का प्रयोग किया जाय तो उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

पुरुष वाचक सर्वनाम
- कहने वाला (मैं / हम) – उत्तम पुरुषवाचक
- सुनने वाला (तुम / आप) – मध्यम पुरुषवाचक
- जिसकी बात की जाय (यह / वह) – प्रथम पुरुषवाचक

2) निश्चयवाचक सर्वनाम – जब किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थान का नाम न लेना चाहे और उनके स्थान पर ऐसा शब्द प्रयोग करे जो निश्चितता का बोध कराये, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। यह दो प्रकार का होता है –

(a) निकटवर्ती – (यह)
(b) दूरवर्ती – (वह)

3) अनिश्चय वाचक सर्वनाम – जब किसी व्यक्ति / वस्तु का नाम न लेकर अन्य शब्द का प्रयोग किया जाय तथा शब्द अनिश्चितता का बोध कराए वहाँ अनिश्चयवाचक सर्वनाम होता है। यह भी दो प्रकार का होता है –

1. कई – जीवबोधक
2. कुछ – वस्तुबोधक

CHANDRAKANT PRAYAGRAJ

Scanned by CamScanner

4) प्रश्नवाचक सर्वनाम– प्रश्न करने के लिए किसी व्यक्ति या वस्तु के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

i. कौन → जीववोधक
ii. क्या → वस्तु बोधक

5) सम्बन्धवाचक सर्वनाम– जिस शब्द से (सर्वनाम) वाक्य में दूसरे सर्वनाम शब्द सम्बन्ध स्थापित किया जाय उसे सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहते हैं।

i. जो
ii. सो

(i) जो दवा खायेगा सो ठीक होगा।
(ii) जो जन्म लिया है सो मरेगा।

6) निजवाचक सर्वनाम– कर्त्ता अपने लिए जिस सर्वनाम शब्द का प्रयोग करता है उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं।
जैसे- (i) मैं यह कार्य आप से ही करवाऊंगा।
(ii) मैं यह कार्य आप ही करूंगा।
यह एक प्रकार का होता है– 'आप'।

विशेषण (Adjective)

→ जब कोई शब्द देकर विशेषण पूछा जाय तो विशेषण ज्ञात करने के लिए कोई नाम (संज्ञा) रखने पर यदि अर्थ निकल आये तो वह शब्द विशेषण ही होगा।
जैसे - प्राचीन इतिहास, मोटा व्यक्ति, नया फल, लाल किला आदि।

→ किसी शब्द के बारे में जो नाम रखते हैं वही विशेष्य है, अर्थात् जिसके बारे में बताया जाय विशेष्य और जो कुछ कहा जाय वह विशेषण होता है।

* जो संज्ञा या सर्वनाम के विषय में कुछ बतलाये उसे विशेषण कहते हैं।

विशेषण 4 प्रकार का होता है–

1) सार्वनामिक विशेषण– सर्वनाम से सम्बन्धित विशेषण को सार्वनामिक विशेषण कहते हैं अर्थात् जब सर्वनाम शब्द विशेषण के कार्य करते हैं तो उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

सार्वनामिक विशेषण → मौलिक सार्वनामिक विशेषण
→ यौगिक सार्वनामिक विशेषण

ALLAHABAD 9005332 DELHI

Scanned by CamScanner

① मौलिक सार्वनामिक विशेषण – जब 11 मूल सर्वनाम, विशेषण का कार्य करते हैं तो उन्हें मौलिक सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।
जैसे – (यह) बालक खतरनाक है।
(वह) घोड़ा बीमार है।

② यौगिक सार्वनामिक विशेषण – जब 11 मूल सर्वनाम के बिगड़े हुए रूप विशेषण का कार्य करें तो उन्हें यौगिक सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।
जैसे – (ऐसे) बच्चे खतरनाक हैं।
(ऐसे) बच्चे बुद्धिमान होते हैं।

2) संख्यावाची विशेषण – जब संख्यायें विशेषण का कार्य करने लगती हैं तो उसे संख्यावाची विशेषण कहते हैं।
यह दो प्रकार का होता है –

संख्यावाची विशेषण
②
निश्चित संख्यावाची
ex – 1. 4 लोग बैठे हैं।
b. पांचवां व्यक्ति बुद्धिमान है।
अनिश्चित संख्यावाची
ex – 1. कुछ लोग बैठे हैं।
b. कई लोग दौड़ रहे हैं।

कक्षा में (बीसियों) छात्र छात्रा हैं। = अनिश्चित संख्या वाची।
(कुछ लोग) (1 दर्जन) केला खा रहे हैं। =
अनिश्चित निश्चित

3) परिमाणवाची विशेषण – वे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम की मात्रा का बोध कराते हैं उन्हें परिमाणवाची विशेषण कहते हैं।
यह दो प्रकार का होता है –

परिमाणवाची विशेषण
②
निश्चित परिमाणवाची विशेषण
ex – 2 kg. सेब
अनिश्चित परिमाणवाची विशेषण
ex – कुछ kg सेब

Scanned by CamScanner

गुणवाची विशेषण – किसी संज्ञा या सर्वनाम के गुणों की विशेषता जिस शब्द से हो है, उसे गुणवाची विशेषण कहलाते हैं।

समय की विशेषता	कालवाची विशेषण जैसे – प्राचीन मंदिर, नया फूल, नवीन
रंगों की विशेषता	रंगवाची विशेषण जैसे – लालमणि, नीलकमल, हरिलाल
दशा/स्थिति की विशेषता	दशावाची विशेषण जैसे – बूढ़ा व्यक्ति, उबला पानी, गरीब
आकार की विशेषता	आकारवाची विशेषण जैसे – गोलाकार, चौकोर, तिकोनिया
गुणों की विशेषता	गुणवाची विशेषण जैसे – सुंदर, स्वस्थ, बुरा

प्रविशेषण

जो विशेषण की विशेषता बतलाये उसे प्रविशेषण कहलाते है।
जैसे- वह लड़का बहुत सुंदर है।

क्रिया
(Verb)

जिससे किसी कार्य के होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं।

क्रिया का निर्माण
- धातु ही क्रिया का कार्य है
- धातु / शब्द + प्रत्यय

क्रिया का निर्माण धातुओं से एवं धातु या शब्दों में प्रत्यय जोड़ने से किया जाता है। इस तरह से धातु से युक्त क्रिया 'धातु-क्रिया' कहलाती है।
धातु में प्रत्यय या शब्द में प्रत्यय जोड़कर बनायी गयी क्रिया 'यौगिक क्रिया' कहलाती है।

अर्थ के आधार पर क्रिया के भेद
(यौगिक क्रिया के भेद)

1. प्रेरणार्थक क्रिया
2. यौगिक क्रिया
3. धातुज क्रिया

CHANDRA CLASSES, ALLAHABAD 8400332620

Scanned by CamScanner

प्रेरणार्थक क्रिया – जब किसी वाक्य में ऐसी क्रिया आये जो कर्ता के लिए प्रयोग में न आकर कर्ता जिसको प्रेरित करके कार्य करवाता है उसके लिए आये तो उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।
जैसे – हंसवाना, पढ़वाना, लिखवाना आदि।

यौगिक क्रिया – जब एक से अधिक क्रियाओं के योग से क्रिया का निर्माण किया जाता है तो उस क्रिया को यौगिक क्रिया कहते हैं।
जैसे – पढ़ना-लिखना, हंसना-बोलना, आना-जाना।

नामधातु क्रिया – जब संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण इत्यादि में प्रत्यय जोड़कर क्रिया का निर्माण किया जाता है तो उसे नामधातु क्रिया कहते हैं।
जैसे- गरमाना, बतियाना, चिकनाना, लहियाना इत्यादि।

रचना/वाक्य में कर्म के प्रयोग के आधार पर
:- क्रिया के भेद -:

① सकर्मक क्रिया
② अकर्मक क्रिया

सकर्मक क्रिया – जिस वाक्य में कर्म आये, वह सदैव सकर्मक क्रिया होती है।
जैसे – वह किताब पढ़ता है।

अकर्मक क्रिया – जब वाक्य में कर्म न आये तो उसे अकर्मक क्रिया होती है

* ध्यान रहे जब क्या और किसको से प्रश्न पूछने पर उत्तर न आये तो उसमें अकर्मक क्रिया होती है।

जैसे – मोहन गाता है। (कर्म हिण है- क्या गाता है = गाना) (X)
ॐ सोहन सोता है। (✓) अकर्मक

* जब वाक्य में कर्म हिण रहे तो वह क्रिया 'सकर्मक' होगी, जब वाक्य में कर्म न हिण रहे तो क्रिया 'अकर्मक' होगी।

Scanned by CamScanner

(i) सीता गाती है।
(ii) मोहन खाता है।
(iii) सुरेश पीटता है।
(iv) रमेश जाता है।
→ सकर्मक

(i) मोहन हँसता है।
(ii) मोहन चलता है।
(iii) बिल्लु रोता है।
(iv) श्याम दौड़ता है।
→ अकर्मक

➡ जब वाक्य में क्रिया का फल कर्त्ता पर पड़े तो वह क्रिया 'अकर्मक' कहलाती है। तथा फल यदि कर्म पर पड़े तो क्रिया 'सकर्मक' कहलाती है।

—: कुछ अन्य प्रमुख क्रियाएँ :—

1. सहायक क्रिया— वाक्य के अर्थ को स्पष्ट करने में मुख्य क्रिया की जो सहायता करे उसे सहायक क्रिया कहते हैं।
जैसे - हूँ, हैं, था, थी, था, गी, गे।

2. पूर्वकालिक क्रिया— जब वाक्य में एक क्रिया के समाप्त होने के पश्चात् जब इसरी क्रिया प्रारम्भ हो तो पूर्व में समाप्त होने वाली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है। (इस क्रिया के अंत में 'कर' या 'करके' का बोध होता है।)
जैसे- शेर को देखकर बिल्लु रोने लगा।

3. द्विकर्मक क्रिया— जब किसी वाक्य में दो कर्मों के साथ कोई क्रिया आये तो वह क्रिया द्विकर्मक क्रिया होती है।
16 द्विकर्मक क्रियाएँ होती हैं—

1. दुहना
2. मांगना
3. पकाना / पचना
4. दण्ड देना
5. रोकना
6. पूछना
7. चुनना (-चयन करना)
8. बोलना
9. शासन करना
10. जीतना
11. मथना
12. मूषना
13. ले जाना
14. हरण करना
15. खेती करना
16. देना / ठगना

CHANDRAKANT UPADHYAY ALLAHABAD 9005332264

Scanned by CamScanner

अन्य संसारी सरं द्वारों को हिंदी पढ़ाते हैं।

(i) वह गाय से दूध दुहता है। (ii) मोहन ने सुरेश को चाँटा मारा।
(गौण कर्म) (मुख्य कर्म)
(iii) अध्यापक ने बच्चों को मिठाई खिलायी।

* 16 द्विकर्मक क्रियाओं का वाक्य में प्रयोग होने पर दो कर्मों का प्रावधान अवश्य रहता है। यदि 16 क्रियाओं का प्रयोग होने पर वाक्य में एक ही कर्म आये तथा दूसरा कोई शब्द अन्य कारक है तो दूसरे कारक को कर्म मान लेना चाहिए।

* इस प्रकार वाक्य में कर्म दो प्रकार के होते हैं—
a. मुख्य कर्म।
b. गौण कर्म।

4. संयुक्त क्रिया— जब किसी एक ही बात को सिद्ध करने के लिए वाक्य में एक साथ एक से अधिक क्रियाएँ आये तो वे क्रियाएँ संयुक्त क्रिया कहलाती हैं।
जैसे — आकाश में चिड़ियाँ उड़ा करती हैं।

⇒ क्रियाएँ सदैव क्रिया की ही कार्य नहीं करती अपितु संज्ञा का भी कार्य करती हैं।
जैसे — (i) टहलना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है।
(ii) देश के लिए मरना गर्व की बात है।

अविकारी शब्द

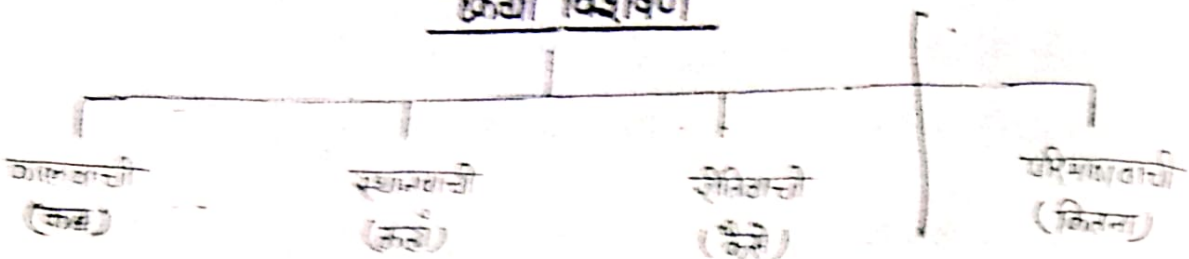
"जिस शब्द का स्वरूप लिङ्ग, वचन, इत्यादि के आधार पर न बदले तो उसे अविकारी शब्द कहते हैं।"

अविकारी शब्द को 'अव्यय' शब्द भी कहते हैं।
अव्यय के 4 भेद होते हैं—
(i) क्रिया विशेषण — (Adverb) (जो क्रिया की विशेषता बतलाए)
(ii) सम्बंध बोधक — (Preposition)
(iii) समुच्चय बोधक — (Conjunction)
(iv) विस्मयादिबोधक — (Interjection)

CHANDAN SINGH YADAV 8409353247

Scanned by CamScanner

क्रिया विशेषण



(1) वह अभी आएगा। – कालवाची
(2) वह इस-उस देश का है। – स्थानवाची
(3) धीरेसे दरवाजा खोलो। – रीतिवाची
(4) सोहन रातभर पढ़ता है। – परिमाणवाची
(5) वह बड़े तेजसे दौड़ता है। – रीतिवाची

"जो शब्द क्रिया की विशेषता बतलाते हैं क्रिया विशेषण कहलाते हैं।"

सम्बन्ध बोधक

"संज्ञा सर्वनाम जो शब्द वाक्य में दूसरे संज्ञा या सर्वनाम के साथ उसका सम्बन्ध बताते हैं, उन्हें सम्बन्ध बोधक कहते हैं।"

संज्ञा/सर्वनाम + सम्बन्ध बोधक = संज्ञा/सर्वनाम

जैसे – (i) मोहन आगरा तक जाता है।

(ii) मोहन बिमार की वजह से नहीं आया।

नोट – यदि ऐसे संज्ञा/सर्वनाम शब्द जो कि सम्बन्ध के बाद न हो तो वे क्रिया विशेषण कहलाते हैं।

जैसे – (i) मोहन धीरेसे बोला। (क्रिया विशेषण)

समुच्चय बोधक

जो शब्द दो शब्दों या दो से अधिक वाक्यों को जोड़ते या अलग करते हैं उन्हें समुच्चय बोधक कहते हैं।

जैसे – किंतु, परन्तु, लेकिन, तथा, एवं, जैसे, यदि, तो, और, नहीं आदि।

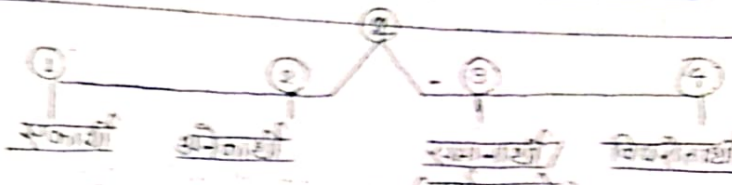
→ मोहन और सोहन।

CHANDRA INSTITUTE ALLAHABAD 8400325202

Scanned by CamScanner

विस्मयबोधक – ये शब्द जो आश्चर्य या कोई भाव प्रकट करते हैं, विस्मयबोधक, अव्यय कहलाते हैं।
जैसे – अरे, हो, रे, छाह, वाह वाहवाह।
→ हे राम।

अर्थ के आधार पर शब्दों के भेद



1. अनेकार्थी शब्द – वह शब्द जो अपने एक से अधिक अर्थ निकलने से उसे अनेकार्थी शब्द कहते हैं।
जैसे – अम्बर – वस्त्र, आकाश।

2. समानार्थी/पर्यायवाची – वह शब्द जो शब्दों का एक ही अर्थ निकलने से उसे पर्यायवाची शब्द कहते हैं।
जैसे – आँख → नैन, नेत्र, दृग, दृगिका, लोचन, अक्षि।
(जो जोड़ने का) → अनाज, गोपक, रोचक, अंगेज, पर्याय।
सहने वाला)

(जो जोड़ने का → उपहार, गोदि, उपहार, अन्नपूर, पर्याय।
देने वाला)

(जो जोड़ने का → विनाशी, वाचाली, तपस्वी, अन्नपूर्ण, पर्यायी।
आदर करने वाला)

उपहार → धनेश्वर, सुधाकर, राकेश, अन्नेश्वर, रमेश, रमेश।

अम्बर –
हवा –
धरती –
चाँद –
नीर –
मोर –
सोना –
मुँह –
पेड़ –

CHANDRA INSTITUTE ALLAHABAD 9400333264

Scanned by CamScanner

घोड़ा -
गंगा - जाह्नवी
पर्वत -
भूमि -
आकाश -
विष्णु -
शंकर -
महादेव -
कोयल - परपुष्ट
यमुना -
गधा - वैशाखनन्दन
कामदेव - मानसिज, मनोज, मदन, अनंग, मीनकेतु, मन्मथ, पुष्पधनता, रतिपति, मकरध्वज
गणेश - वक्रतुण्ड
कार्तिकेय - शरभव, षडानन
तोता -
मुर्गा - ताम्रचूड़

CHAUHAN INSTITUTE, ALLAHABAD 8400332624

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

निर्वक

सा/षा
इच्छा करना / रखना

सु/षु
इच्छा करने वाला / रखने वाला

पिपासा - पीने की इच्छा	पिपासु -
जिज्ञासा - जानने की इच्छा	जिज्ञासु -
जिजीविषा - जीने की इच्छा	जिजीविषु -
मुमुर्षा - मरने की इच्छा	मुमुर्षु -
मुमुक्षा - मोक्ष की इच्छा	मुमुक्षु -
युयुत्सा - युद्ध की इच्छा	युयुत्सु -
तितीर्षा - तैरने की इच्छा	तितीर्षु -
चिकीर्षा - कार्य करने की इच्छा	चिकीर्षु -

इत / ख्यात
क्रिया हो चुकी हो
गया / गया / गये

ईय / अनीय
योग्यता या संभावना को दर्शाता है।

अकथित - जो कहा न जा सके या हो

अकथनीय - जो कहने योग्य न हो।

Scanned by CamScanner

ज्ञ = जानने वाला

तज्ञ – जो सबकुछ जानता हो।
बहुज्ञ – बहुत कुछ जानने वाला।
अल्पज्ञ – थोड़ा जानने वाला।
अज्ञ – जो कुछ नहीं जानता है।
विज्ञ – जो अच्छा-बुरा दोनों जानता है।
प्रज्ञ – जो अच्छा जानता है।
अभिज्ञ – जो पूरी तरह से जानता है।
अनभिज्ञ – जो पूरी तरह से नहीं जानता है।
मर्मज्ञ – लक्ष्य की बात जानने वाला।
कृतज्ञ – किये गये कार्य को (उपकार) जानने वाला।
कृतघ्न – " " " न (") जानने वाला।

ज = उत्पन्न होने वाला

स्वेदज – पसीने से उत्पन्न होने वाला।
उद्भिज – पृथ्वी को भेद कर उत्पन्न होने वाला।
मरुद्भिद् – रेगिस्तान में उत्पन्न होने वाला।
जलोद्भिद् – जल में उत्पन्न होने वाला।

जा = उत्पन्न होने वाली

भूमिजा – भूमि से उत्पन्न होने वाली (सीता)
शैलजा – पर्वत से उत्पन्न होने वाली (पार्वती)
अर्कजा – सूर्य से उत्पन्न होने वाली (यमुना)
तनूजा – तन से उत्पन्न होने वाली (पुत्री)

कुछ महत्त्वपूर्ण शब्द

अनाहूत – जिसको बुलाया न गया हो।
अतिथि – जिसके आने की तिथि निश्चित न हो।
अगोचर – जहाँ तुम्हारी इन्द्रियाँ न पहुँच सकें।
अगम्य – जहाँ जाया (पहुँचा) न जा सके।
अदृश्य – जिसे देखा न जा सके।
दुर्गम – जहाँ जाना कठिन हो।
असूर्यम्पश्या – वह स्त्री जो सूर्य के दर्शन न कर पाती हो।
नवोढ़ा – नयी नवेली दुल्हन।
अकाल – समय से पहले न होने वाली घटना।
दुर्भिक्ष – ऐसी स्थिति जहाँ भिक्षा माँगना भी कठिन हो।
आगतपतिका – जिसका पति आ चुका हो।
आगमिष्यत्पतिका – जिसका पति आने वाला हो।
प्रोषितपतिका – जिसका पति कहीं जा चुका हो।
खण्डिता नायिका – ऐसी स्त्री जिसका प्रेमी दूसरे से प्रेम करे।
अभिसारिका – वह नायिका जो अपने प्रेमी से मिलने जाय या पास बुलाए।
आकिंचन – जिसके पास कुछ न हो।
इन्द्रियातीत – जो इन्द्रियों से परे हो।
उपत्यका – पर्वत के समीप की भूमि। (दो पर्वतों के मध्य की भूमि)
अधित्यका – पर्वत के ऊपर का समतल मैदान।
क्रैण – जो लोक का गुलाम हो।

Scanned by CamScanner

मितव्ययी - जो आवश्यकतानुसार खर्च करे।
अल्पव्ययी - कम खर्च करे।
अव्ययी - जो बिल्कुल भी खर्च न करे।
अपव्ययी - जो आवश्यकता से अधिक खर्च करे।
अन्त्यज - जो सबसे अंत में जन्म लिया हो।
अग्रज - जो सबसे पहले जन्म लिया हो।
मृत्युञ्जय - जो मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लिया हो।
औरस - एक ही पिता/विवाहिता स्त्री से जन्म लिया हो।
कानीन - कुंवारी कन्या से उत्पन्न पुत्र।

वाक्य

"शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं।"

वाक्य के दो अंग होते हैं—

① उद्देश्य ,
② विधेय ,

उद्देश्य – जिसके बारे में कुछ कहा जाय उसे उद्देश्य कहते हैं (कर्त्ता)।

विधेय – उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाता है, उसे विधेय कहते हैं।

सामान्य रूप से वाक्य के कुल 8 भेद होते हैं—

अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद–

1. विधिवाचक –
2. निषेधवाचक –
3. प्रश्नवाचक –
4. आज्ञावाचक –
5. इच्छावाचक –
6. सन्देहवाचक –
7. विस्मयबोधक –
8. संकेतवाचक –

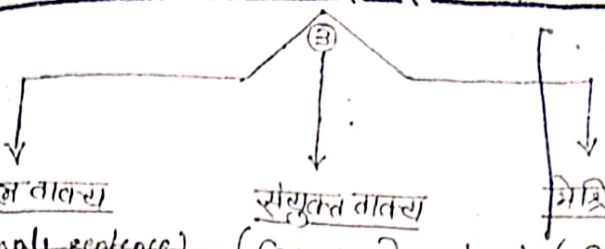
ऐसा वाक्य जिसमें एक आश्रित वाक्य दूसरे मुख्य वाक्य पर निर्भर रहे तो उसे 'संकेतवाचक' वाक्य कहते हैं।

जैसे – वह कठिन परिश्रम करता है ताकि TET पास हो जाय।
वह दवा खायेगा तभी ठीक होगा।

ALLAHABAD 8400332264

Scanned by CamScanner

रचना या बनावट के आधार पर वाक्य के भेद –



सरल वाक्य – जिस वाक्य में एक ही उद्देश्य व एक ही विधेय हो, सरल वाक्य कहलाता है।

ex- मोहन पुस्तक पढ़ता है।
सुरेश गीत गाता है।

संयुक्त वाक्य – जब दो या दो से अधिक वाक्यों को समुच्चय बोधक शब्दों से जोड़कर निर्मित करते हैं, तो उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं।

या

एक से अधिक सरल वाक्य होने के कारण इसमें एक से अधिक उद्देश्य और विधेय होते है।

ex- मोहन पुस्तक पढ़ता है और श्याम गीत गाता है।
(ii) वह घर जाता है लेकिन खाना नहीं खाता है।

मिश्रित वाक्य – जिस वाक्य में एक आश्रित वाक्य (उपवाक्य) होता है तथा दूसरा मुख्य वाक्य हो तो उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं।

ex- (i) वह स्वयं जाता है ताकि ठीक हो जाय।
(ii) वह कठोर परिश्रम करता है ताकि IIT पास हो जाय।

CHANDAN KUMAR 9100332574

Scanned by CamScanner

वाच्य
(Voice)

वाच्य 3 प्रकार के होते हैं। —
(i) कर्तृवाच्य – क्रिया का रूप कर्त्ता के अनुसार हो।
(ii) कर्मवाच्य – क्रिया का रूप कर्म के अनुसार हो।
(iii) भाववाच्य – किसी आधार पर (भाव के) न हो।

"क्रिया के उस परिवर्तन को वाच्य कहते हैं, जिसके द्वारा इस बात का बोध होता है कि वाक्य में कर्त्ता की प्रधानता है या कर्म की या भाव की।"

वाच्य 3 प्रकार के होते हैं—

(i) कर्तृवाच्य (ii) कर्मवाच्य (iii) भाववाच्य

1) कर्तृवाच्य –
(कर्त्ता + कर्म + क्रिया) कर्म का भी रूप है और नहीं भी

जिस वाक्य में क्रिया का लिंग, वचन; कर्ता के लिंग, वचन के अनुसार हो उसे कर्तृवाच्य कहते हैं।

जैसे - मोहन पुस्तक पढ़ता है।
राधा पुस्तक पढ़ती है।

2) कर्मवाच्य –
(कर्त्ता + कर्म + क्रिया) अनिश्चय की

जिस वाक्य में कर्म की प्रधानता होती है अर्थात् क्रिया का लिंग, वचन कर्ता के लिंग, वचन के अनुसार हो, कर्मवाच्य कहलाता है।

जैसे – मोहन ने गीत गाया। राधा ने गीत गाया।
मोहन के द्वारा पत्र लिखा गया।

3. भाववाच्य –
जिस वाक्य में क्रिया की प्रधानता होती है अर्थात् क्रिया किस विशेष भाव का बोध कराये वहाँ भाववाच्य होता है।

जैसे - ठण्ड के कारण मुझसे चला नहीं जाता है।

ALLAHABAD 8400393764

Scanned by CamScanner

वाच्य परिवर्तन -

कर्तृवाच्य का वह उदाहरण जिसमें कर्म आये तो वह सदैव कर्मवाच्य में ही परिवर्तित होगा।

जैसे -(i) मोहन पुस्तक पढ़ता है। (कर्तृवाच्य)

~~वाच्य परिवर्तन-~~ मोहन के द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है। (कर्मवाच्य)

कर्तृवाच्य का वह उदाहरण जिसमें कर्म न आये तो वह सदैव भाववाच्य में परिवर्तित होता है।

~~(i) मोहन खाता है। (कर्तृवाच्य)~~

⇒ मोहन द्वारा खाया जाता है। (भाववाच्य)

CHANDRA INSTITUTE ALLAHABAD 8400332

Scanned by CamScanner

वचन

वे शब्द "संज्ञा का वह रूप जिससे उसकी संख्या का बोध हो, वचन कहलाता है।"

हिन्दी में वचन दो प्रकार के होते हैं –

① एकवचन
② बहुवचन

वचन से सम्बन्धित कुछ प्रमुख बातें –

कुछ ऐसे शब्द हैं जिनका प्रयो सदैव बहुवचन में ही होता है। इनका एकवचन में प्रयोग नहीं होता है।
जैसे – प्राण, लोग, आँसू, बाल (बिना टूटा), दर्शन, हस्ताक्षर, अक्षत etc.

अशुद्ध – वीरों ने प्राणों की आहुति दी।
शुद्ध – वीरों ने प्राण की आहुति दी।

अशुद्ध – यह सुनकर मोहन का लोग उड़ गया।
शुद्ध – यह सुनकर मोहन के होश उड़ गये।

अशुद्ध – भगवान का दर्शन हुआ।
शुद्ध – भगवान के दर्शन हुए।

उसके द्वारा हस्ताक्षर किया गया।
उसके द्वारा हस्ताक्षर किये गये।

आँखों से आंसुओं की धारा बह रही थी।
आंखों से आंसू की धारा बह रही थी।

रमेश का बाल झड़ रहा है।
रमेश के बाल झड़ रहे हैं।

अक्षत लगाया गया।
अक्षत लगाये गये।

होंठ सूख गया।
होंठ सूखे गये।

Scanned by CamScanner

(*) - जब किसी का सम्मान करना होता है तो क्रिया बहुवचन में होती है।

रमेश का पिता आ रहा है।
रमेश के पिताजी आ रहे हैं।

(*) कुछ ऐसे शब्द हैं जिनका प्रयोग सदैव एकवचन में ही होता है।
सामग्री, सामान, सोना (gold), माल (सामग्री), जनता, पुलिस इत्यादि।

उसके द्वारा सामग्रियों को लाया गया।
उसके द्वारा सामग्री लायी गयी।

मोहन ने बाजार से सामानों को खरीदा।
मोहन ने बाजार से सामान खरीदा।

सोनों की कीमत जौहरी जानता है।
सोना की कीमत जौहरी जानता है।

माल खरीदे गये।
माल खरीदा गया।

जनता वोट दिये।
जनता ने वोट दिया।

पुलिस आये।
पुलिस आयी।

'अनेक' शब्द ही बहुवचन है इसका रूप 'अनेको' नहीं बनता है।

इलाहाबाद शहर में अनेको सिनेमाघर हैं।
इलाहाबाद शहर में अनेक सिनेमाघर हैं।

एकवचन से बहुवचन बनाने का नियम –

पुल्लिंग / पुं०

अ/आ

↓

ए

घोड़ा - घोड़े

उ/ऊ

ओं

बहू - बहुओं

स्त्री०

अ/आ

↓

एं/यें

बालिका - बालिकाएं
लता - लतायें

इ/ई

यों

नदी - नदियों
एक गली - गलियों

ALLAHABAD 9450033626

Scanned by CamScanner

लिंग

"संज्ञा का वह रूप जिससे उसकी जाति का बोध होता है; लिंग कहलाता है।"

हिन्दी में लिंग दो प्रकार का होता है —

पुल्लिंग
स्त्रीलिंग

हाथी, पानी, दही इत्यादि - पुल्लिंग

पानी बहता है।
दही खट्टा है
हाथी खाता है।

अधिकांशतः वृक्षों के नाम पुल्लिंग होते हैं लेकिन नारंगी, लीची, नाशपाती, नीम इत्यादि स्त्रीलिंग में आते हैं।

लेखक	लेखिका
कवि	कवयित्री
विद्वान	विदुषी
महान	महती
साधु	साध्वी
ठाकुर	ठकुराइन
नेता	नेत्री
अभिनेता	अभिनेत्री
गुरु	गुर्वी
ब्रह्मर्षि	ब्रह्मर्षिका
योगी	योगिन
धोबी	धोबिन
तेली	तेलिन
बनिया	बानिन

किसी पुल्लिंग शब्द में 'ई' रहे तो स्त्री० बनाते समय 'इन' जोड़ देते हैं।

किसी पुल्लिंग शब्द के (अकारांत हो तो स्त्री० बनाते समय दीर्घ (ई) कर देना चाहिए।

अधिकांशतः नदियों के नाम स्त्री० होते हैं परंतु कुछ पुल्लिंग में आती हैं — ब्रह्मपुत्र, सोन, दामोदर, सिंधु इत्यादि।

CHANDRAKANT TIWARI ALLAHABAD 8400333264

Scanned by CamScanner

वर्तनी

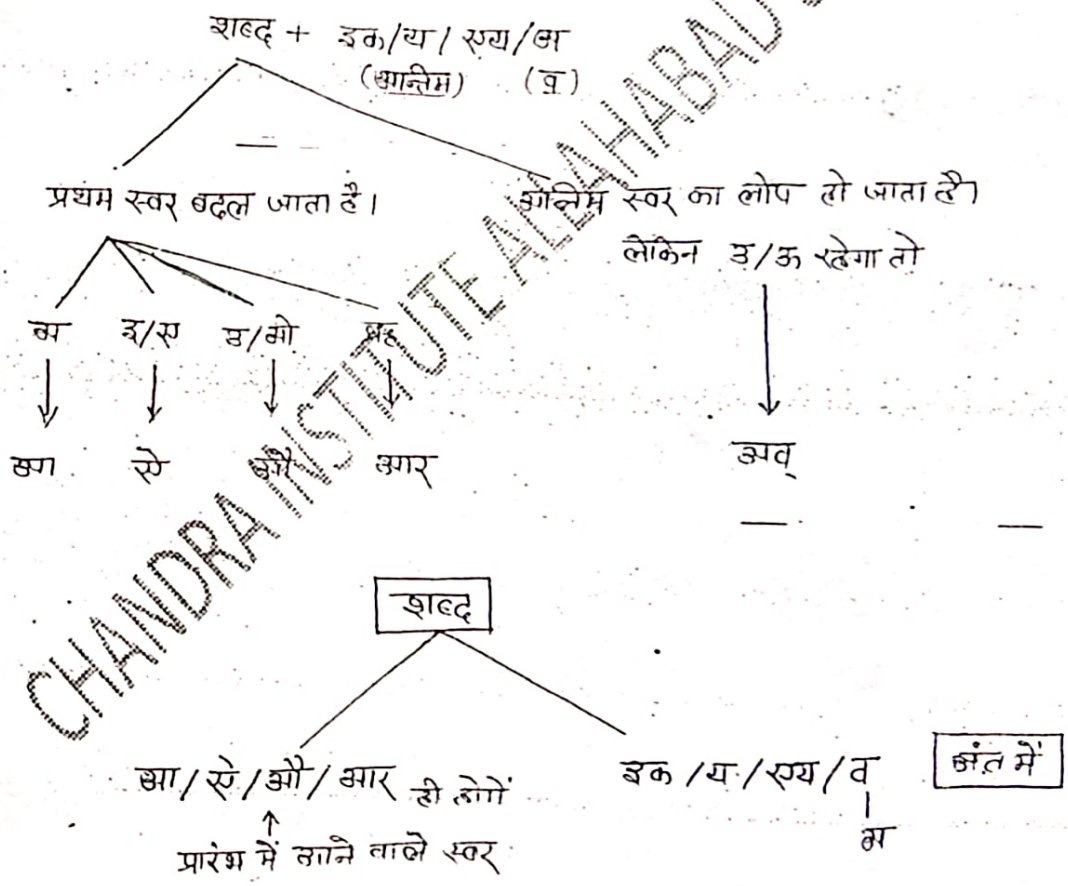
किसी शब्द के मध्य में विसर्ग तभी आयेगा जब उस विसर्ग के ठीक बाद वाले शब्द के प्रारम्भ में क/ख/ष/फ रहे तो –

जैसे – अन्तः करण ।
अधः पतन

यदि क/ख/ष/फ न आये तो वहाँ विसर्ग न होकर 'ओ' होगा ।

जैसे – अधोगति, मनोबल, तपोभूमि इत्यादि ।

प्रत्यय से सम्बन्धित वर्तनी–



ग्रह + ईत = गृहीत → अनुगृहीत, संगृहीत

उपसर्ग से – केवल उपसर्ग से युक्त शब्दों को शुद्ध बतलाने के लिए शब्द के पीछे से सार्थक शब्द निकालना चाहिए (यदि सार्थक नहीं मिला तो वह अशुद्ध है

पुनरुक्त = पुनः + उक्त
अनाधिकार = अन् + अधिकार –
इत्यवस्था = इति + अवस्था

CHANDRA INSTITUTE, ALLAHABAD 9450033250

Scanned by CamScanner

अशुद्ध		शुद्ध
अहिल्या	———	अहल्या
बाल्मीकी	———	वाल्मीकि
ज्यौत्सना	———	ज्योत्स्ना
उज्जवल	———	उज्ज्वल
संन्यासी	———	संन्यासी
शुर्पणखा	———	शूर्पणखा
विभिषण	———	विभीषण
अंतर्धारी	———	अन्तर्धार्री
हिरण्यकश्यप	—	हिरण्यकशिपु
आशीर्वाद	—	आशीर्वाद
अन्तर्राष्ट्रिय	—	
श्रृंगार	———	
अन्तर्ध्यान	———	
आसाढ	———	
उच्छृंखल	———	
कैलाश	———	
कौसल्या	———	
अलोहिनी	———	

इष्ठ / इष्ट

के प्रारंभ में कभी उपसर्ग नहीं लगता

↓

बलिष्ठ, धनिष्ठ, गरिष्ठ

के प्रारंभ में उपसर्ग लगा रहेगा।

↓

अन्तर्योष्टे, यशेष्ट, परिशेष्ट

CHANDRAKANT INSTITUTE ALLAHABAD 9400333264

Scanned by CamScanner

CHANDRA INSTITUTE ALLAHABAD 8400033326

Scanned by CamScanner

वाक्य में काल को पहचान (क्रिया) कैसे करें ?

काल

वर्तमान काल (5 प्रकार)

(i) सामान्य वर्तमान काल (ता है/ती है/ते हैं)

(ii) तात्कालिक वर्तमान काल (Continuous) (रहा है/रही है)

(iii) पूर्ण वर्तमान काल (Perfect tense) [चुका है/चुकी है]

(iv) संदिग्ध वर्तमान काल (Doubtful) (Impotent) [ता होगा/ती होगी]
राधा गाती होगी।
वर्षा होती होगी।

(v) संभाव्य वर्तमान काल (Impotent) [ता हो/ती हो/ते हो]
मोहन पढ़ता हो।
वर्षा होती हो। (शायद)

भूतकाल (6 प्रकार)

(i) सामान्य भूतकाल [गया/गयी/गये]

(ii) आसन्न भूतकाल
(a) मोहन घर गया है। (आजकी का भूतकाल)
(b) राधा गीत गायी है।
[सामान्य भूत में है लगाने पर आसन्न भूत बन जाता है।]
(c) वे लोग घर गये हैं।

(iii) पूर्ण भूतकाल (Perfect) [चुका था/चुकी थी/चुके थे]

(iv) अपूर्ण भूतकाल (Continuous) [रहा था/रही थी/रहे थे]
वे लोग हँस रहे थे।

(v) संदिग्ध भूतकाल
गया होगा/गयी होगी/गये होंगे
(a) वह गया होगा

(vi) हेतुहेतुमद् भूतकाल (क्रिया समाप्त नहीं होती)
a. मोहन जाता।
b. राधा गीत गाती।
c. वे पुस्तक पढ़ते।

भविष्य काल (3 प्रकार)

(i) सामान्य भविष्य काल (गा/गी/गे)
a. राधा गीत गायेगी।

(ii) संभाव्य भविष्य काल
a. संभवतः रोहन पढ़े।
b. शायद तुम्हारे मित्र आयें।

(iii) हेतुहेतुमद् भविष्य काल [किसी कारण से क्रिया संपन्न हो तो भविष्य में]
→ जिस वाक्य में कोई क्रिया तभी की जाय जब उसका कारण उपस्थित हो अर्थात् जब एक क्रिया दूसरी क्रिया पर निर्भर करे तो वाक्य हेतुहे भविष्य काल होता है।
ex- रोशन को जीविका मिले तो वह पढ़े।

बालक अयोध्या के अरण्य में कितना सुन्दर युद्ध लड़े अभेद्य — Trick (रामायण काण्ड)

बालकाण्ड | अयोध्याकाण्ड | अरण्यकाण्ड | किष्किन्धा काण्ड | लंका कांड | उत्तर काण्ड

— सुंदरकांड

CHANDAN KUMAR SINHA

Scanned by CamScanner

वाक्य शुद्धि

संज्ञा से सम्बन्धित अशुद्धियाँ —

1. वह प्रात: काल के समय टहलता है। — वह प्रात:काल टहलता है।
2. मैं मंगलवार के दिन व्रत रखता हूँ। — मैं मंगलवार को व्रत रखता हूँ।
3. विन्ध्याचल पर्वत हरा-भरा दिखने लगा — विंध्याचल हरा भरा दिखने लगा है। है।
4. वह सज्जन व्यक्ति है। — वह सज्जन है।
5. हमारा देश सन् 1947 में गुलामी की — गुलामी दासता से मुक्त हुआ था।
6. वर्षाकाल के दिनों में चारों ओर कीचड़ — वर्षाकाल में चारों ओर कीचड़ हो जाता है। हो जाता है।
7. देश में अराजकता की समस्या बढ़ — अराजकता गयी है।
8. आप लोग परस्पर एक-दूसरे से बातचीत — परस्पर — कर रहे हैं।
9. वह प्रति रोज स्नान करता है। — रोज
10. टेलीविजन की उत्पत्ति किसने की। — आविष्कार
11. राम ने रावण की हत्या की। — वध (पापियों का)
12. नाथूराम गोडसे ने गाँधी जी — हत्या (निर्दोषों की) का वध किया।
13. तलवार एक उपयोगी अस्त्र है। — शस्त्र

बंदूक एक उपयोगी शस्त्र है। — अस्त्र

मैं गाने की कसरत कर रहा हूँ। — अभ्यास

Scanned by CamScanner

16. सफलता के मार्ग में संकट आते हैं। ——— बाधा

17. आपके प्रश्न का समाधान मिल गया। ——— उत्तर

18. आपने इस पुस्तक का कितना भाग पढ़ लिया? ——— अंश

19. प्रेम करना तलवार के नोंक पर चलना है। ——— धार

20. देश में भूख की समस्या है। ——— भूखमरी की समस्या

21. हमारे देश के मनुष्य परिश्रमी होते हैं। ——— लोग

सर्वनाम से सम्बन्धित अशुद्धियाँ

1. ये स्त्री दुष्ट स्वभाव की है। ——— यह स्त्री

2. मैंने तेरे को बोला तो था ——— तुमसे

3. उसको लड़का हुआ है। ——— उसके

4. चाय में कौन पड़ा है? ——— क्या

5. तुम मुझे गाली क्यों दिया? ——— दी, तुमने

6. मैं हस्ताक्षर किया? ——— मैंने हस्ताक्षर किये।

7. ये आकाशवाणी का इलाहाबाद केंद्र है। ——— यह

8. उन्हें तब पता चलेगा ——— उनको

9. राम ने कहा कि वह कल जायेगा ——— राम ने कहा कि मैं कल जा

10. तुम तुम्हारा नाम बताओ ——— आपना

CHANDRA TUTORIAL ALLAHABAD 8400332824

Scanned by CamScanner

विशेषण से सम्बन्धित अशुद्धियाँ–

1.	मेले में भारी - भरकम भीड़ थी ।	भारी भीड़ थी ।
2.	राम कथा पर आधारित पुस्तकों में तुलसी कृत मानस बहुत श्रेष्ठ है ।	ग्रन्थों में, सर्वश्रेष्ठ है ।
3.	वह सबसे सुन्दरतम साड़ी है ।	सुंदरतम साड़ी है ।
4.	वर्षा पूरी रात भर होती रही ।	वर्षा रातभर होती रही ।
5.	मुझे भारी भूख लगी है ।	मुझे बहुत भूख लगी है ।
6.	भ्रष्टाचार देश की गहरी समस्या है ।	गंभीर समस्या है ।
7.	आगामी दुर्घटना के बारे मुझे कुछ भी पता न था ।	भावी दुर्घटना
8.	वे बड़े अच्छे खिलाड़ी है ।	बहुत अच्छे
9.	वहाँ दो दिवसीय गोष्ठी का आयोजन किया गया ।	द्विदिवसीय
10.	आप लोग अपनी राय दें ।	अपनी - अपनी राय दें ।
11.	प्राय: सभी लोग प्रसन्न थे ।	सभी लोग प्रसन्न थे ।
12.	सेवानिवृत्ति के बाद भावी जीवन कहाँ बितायेंगे ।	शेष जीवन
13.	आप की सौभाग्यवती कन्या का विवाह कब है ?	आयुष्मती, सौभाग्यकांक्षिणी
14.	आप लोग अपनी कविताएँ सुनाएँ	अपनी - अपनी
15.	यह उसका हवा बच्चा होगा ।	हवा बच्चा
16.	साहित्य और जीवन में घोर सम्बंध है ।	घनिष्ठ सम्बंध
17.	यह सुनकर वह क्रोधित हुआ ।	क्रुद्ध

STUDY CIRCLE ALLAHABAD 9839.2...

Scanned by CamScanner

क्रिया से सम्बन्धित अशुद्धियाँ–

1. आजकल सोनों का भाव बढ़ गये हैं।	.....	सोने के
2. सभा में उपस्थित प्रत्येक सदस्यों का यही विचार होगा।	.....	प्रत्येक सदस्य
3. चारों आश्रमों का नाम बताओ	.....	के
4. हर एक ने टोपियाँ पहन रखी थीं।	.....	टोपी
5. पाँच आदमी का खाना बना लो।	.....	आदमियों

CHAUDHARY INSTITUTE ALLAHABAD 8400233264

Scanned by CamScanner

आधुनिक युग की काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ

लेखक	ग्रन्थ का नाम
1) भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र	नाटक
2) कन्हैयालाल पोद्दार	रसमंजरी, अलंकार मंजरी
3) लाला भगवानदीन	अलंकार मंजूषा
4) डॉ. रमाशंकर शुक्ल 'रसाल'	अलंकार पीयूष
5) अर्जुन सिंह केड़िया	भारती भूषण
6) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	रसकलश
7) बाबू श्यामसुन्दर दास	साहित्यालोचन
8) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	चिन्तामणि, रसमीमांसा
9) लक्ष्मी नारायण सिंह 'सुधांशु'	काव्य में अभिव्यंजनावाद
10) सुमित्रानन्दन पंत	पल्लव की भूमिका
11) बाबू गुलाबराय	नवरस, सिद्धान्त और अध्ययन
12) आचार्य रामदहिन मिश्र	काव्य दर्पण
13) आचार्य बलदेव उपाध्याय	भारतीय साहित्यशास्त्र

Scanned by CamScanner

14> आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र — वाङ्मय विमर्श

15> डॉ. नगेन्द्र — भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका, रस सिद्धान्त

16> डॉ. आनन्द प्रकाश दीक्षित — रस सिद्धान्त - स्वरूप विश्लेषण

17> डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी — रस विमर्श

18> डॉ. भगीरथ मिश्र — काव्यशास्त्र

19> डॉ. सत्यदेव चौधरी — भारतीय काव्यशास्त्र

20> डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत — शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त

CHANDRA INSTITUTE 9240033326

Scanned by CamScanner

आदिकाल → 1050-1375 विक्रम

1. पृथ्वीराज रासो - चन्दबरदाई
2. बीसलदेव रासो - बिसलदेव रासो
3. परमाल रासो (जगनिक)
4. खुमान रासो

2. सिद्ध साहित्य
   1. सरहपा
   2. शबरपा (780ई.)
   3. लुइपा
   4. डोम्भिपा / डोम्बिपा
   5. कण्हपा
   6. कुक्कुरिपा

3. नाथ साहित्य
   1. गोरखनाथ

4. जैन साहित्य
   1. आचार्य देवसेन
   2. शालिभद्र सूरि
   3. स्वयंभू (8 वीं शताब्दी)
   4. पुष्पदन्त
   5. जैनाचार्य हेमचन्द्र
   6. सोमप्रभुसूरि
   7. मेरुतुंग
   8. विद्यापति
   9. अमीर खुसरो (1253-1325ई.)
   9. डिंगल
   10. पिंगल

CHANDRA INSTITUTE ALLAHABAD 8400332267

Scanned by CamScanner

(पूर्वमध्यकाल)

भक्तिकाल- 1375-1700 वि-

1. रामानंद - (1368-1468) - प्रयाग के कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार में।
2. रैदास - (1398-1448) - काशी में; गुरु स्वामी रामानन्द
3. कबीरदास - (1455-1518) - लहरतारा (काशी)
4. जम्भनदास - (1451-1523) - पीपासर (जोधपुर राज्य के नागौर प्रदेश में)
5. नानकदेव - (1469-1538) - लाहौर के निकट, रावी के तलवंडी नामक ग्राम "उदासी सम्प्रदाय" का प्रवर्तन किया।
6. मीराबाई - (1498-1546) -
7. सींगा - (1519-1659) - खजुर (मध्य प्रदेश)
8. लालदास - (1540-1648) -
9. दादू दयाल - (1544-1603) - अहमदाबाद (गुजरात)
10. गुरु अर्जुनदेव - (1563-1606) -
11. रज्जब - (1567-1689) -
12. मलूकदास - (1574-1682) - इलाहाबाद
13. सुन्दरदास - (1596-1689) - धोसा (जयपुर राज्य)

CHANDRA INSTITUTE HUMANITIES

Scanned by CamScanner

सगुण काव्य परम्परा

अष्टछाप

1 कुम्भनदास – 1468
2 सूरदास – 1478
3 परमानन्ददास – 1483
4 कृष्णदास – 1496
5 गोविन्द स्वामी – 1505
6 छीतस्वामी – 1515
7 चतुर्भुजदास – 1530
8 नन्ददास – 1533

वल्लभाचार्य के शिष्य

सगुण भक्ति

1 रामानुजाचार्य – (1017 – 1127)
↓
2 निम्बार्काचार्य – (1162)
↓
3 मध्वाचार्य – (1199)
↓
4 विष्णुस्वामी – (1300)
↓
5 रामानन्द – (1400 – 1470)

CHANDRA INSTITUTE ALLAHABAD 9005332252

Scanned by CamScanner

6 कुम्भनदास – (1468)

↓

7 वल्लभाचार्य – (1479)

↓

8 सूरदास – (1480)

↓

9 तुलसीदास – (1523 – 1532 ई.)

↓

10 केशवदास – (1555 – 1617)

↓

11 अग्रदास – (1556)

↓

12 नाभादास – (1570)

↓

13 ध्रुवदास – (1573 ई.)

↓

14 सेनापति – (1589 ई. के लगभग माना जाता है)

कृष्ण भक्त धारा के प्रमुख कवि-

1 सूरदास – (1478 ई.)

↓

2 कुम्भनदास – (1468 – 1583 ई.)

CHANDVANI INSTITUTE ALLAHABAD 8400332624

Scanned by CamScanner

3 परमानन्ददास – (1493 ई.)

↓

4 कृष्णदास – (1496-1578 ई.)

↓

5 मीराबाई – (1504- 1558 से 1563 के मध्य में)

↓

6 गोविन्द स्वामी – (1505 ई.)

↓

7 चतुर्भुजदास – (1530 - 1585 ई.)

↓

8 नंददास – (1533 - 1583) - उत्तर प्रदेश के सूकरखेत (सोरों) रामपुर में

↓

9 रसखान – (1533- 1618 ई.)

↓

10 छीतस्वामी – (1555 - 1585 ई.)

रीतिकाल - 1700 - 1900 विक्रम (सन् 1643 - 1843 ई.)

1 केशवदास – (1555 - 1617) टेहरी

↓

2 बिहारी – (1595 - 1663) ग्वालियर

↓

3 चिंतामणि – (1600 - 1680-85) के आस-पास तिकवाँपुर, कानपुर

↓

4 कुलपति मिश्र – (1600 - 1700 ई.)

CHAITANYA INSTITUTE ALLAHABAD 8400333264

Scanned by CamScanner

5 रसनिधि – (1603-1660 ई.)

6 मतिराम – (1604-1701 ई.) तिकवाँपुर, कानपुर

7 भूषण – (1613-1715 ई.) - तिकवाँपुर, कानपुर.

8 महाराज जशवन्त सिंह – (1627-1729) मारवाण

9 सुखदेव मिश्र – (1633-1703 ई.)

10 कविवृन्द – (1643-1723 ई.)

11 सेनापति – (1650 ई. के लगभग)

12 नृप शंभु – (1657 ई.)

13 कुमारमणि – (1665 ई. आस-पास)

14 देव – (1673-1767 ई.) इटावा –

15 घनानन्द – (1689-1739 ई.)

16 रसलीन – (1699-1750 ई.)

17 कृष्ण कवि – (1720 ई. के आस-पास रहता है।)

18 सोमनाथ – (1725-1760 ई.) – "रस पीयूष निधि" एवं "शृंगार विलास"

19 भिखारीदास – (1725-1760 ई.) ड्योंगा प्रतापगढ़

20 रसिक गोविन्द – (1743 के आस-पास 1838 ई.)

RAU'S IAS INSTITUTE ALLAHABAD 8400332244

Scanned by CamScanner

21 बोधा – (1747)

↓

22 पद्माकर भट्ट – (1753-1833) – बाँदा

↓

23 हठी जी – (1780 के आस-पास)

↓

24 विक्रमादित्य – (1782-1829)

↓

25 अमीरदास – (1783- के आस-पास)

↓

26 ग्वाल कवि – (1791-1868) → यमुना लहरी, रसरंग, रायरूप, कुबजारूप – द्वंशतक, गुरु पचासा आदि महत्व पूर्ण हैं।

↓

27 राम सहाय – (1803-1823)

↓

28 पजनेस – (1817 के आस-पास)

↓

29 द्विजदेव – (1820-1861)

↓

30 प्रतापसाहि – 1823-1843 के बीच माना जाता है।

↓

31 आलम

↓

32 ठाकुर

Scanned by CamScanner